शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भीली जीवन में लोक साहित्य की वाचिक परम्परा

डॉ. प्रभा बहार
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत एक विशाल एवं विविधताओं से सम्पन्न देश है। यहाँ अनेक धर्म, मत, सम्प्रदाय, प्रजाति एवं जाति के लोग निवास करते हैं। जनजातियाँ प्रायः ऐसे भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती हैं जहाँ सभ्यता का प्रकाश अभी तक नहीं पहुँचा है। आदिवासी समुदायों ने अपनी लोक संस्कृति को लोक साहित्य में सहेज कर रखा है । यह लोक साहित्य मुख्य रूप से वाचिक परम्परा में उपलब्ध है । वर्तमान में आदिवासी लोक संस्कृति पर अनेक दृष्टियों से अध्ययन किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में भीली जीवन में लोक साहित्य की वाचिक परम्परा पर विचार किया गया है

भूमिका

गिलिन और गिलिन ने जनजाति को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "स्थानीय जनजाति समूहों का एक ऐसा समूह जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है , एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है तथा जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती है।"1 भील वृहद हिन्दू समाज के ही एक अंग रहे हैं। वनवासी होने के कारण विकास के अवसरों से वे वंचित रहे हैं। इसलिए उनमें और शेष हिन्दुओं में अन्तर परिलक्षित होने लगा। यही कारण है कि वैदिक साहित्य में इनका उल्लेख पंचम वर्ण के रूप में हुआ है। भील परिवार सामान्यतः गाँवों में निवास करते हैं। भीली साहित्य मुख्य रूप से भीलों के जीवन से सम्बद्ध है, जिनमें उनके कृषि-कार्य, खेत-खलिहान, रहन-सहन, प्रणय-प्रसंग, सुख-दुःख आदि का मर्मस्पर्शी वर्णन है , जो अंतस को छू लेने वाला सजीव होता है। अकृत्रिम होने के नाते स्वाभाविकता से सराबोर भीली काव्य कंठस्थ रहकर भी अत्यधिक प्रभा शाली होता है। कुछ पढ़ा-लिखा तबका इसे उपेक्षा की दृष्टि से देखता रहा है, किन्तु इसके अतल में पैठकर परखा जाये तो असीम आनंद की उपलब्धि होती है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है , उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है, लोक राष्ट्र का अमरस्वरूप है। लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। वर्तमान में इनका साहित्य इनका अपना क्षेत्र है। उसकी पाठशाला, खेत-खलिहान, ढोर, जंगल, नदी, पहाड़ आदि तो हैं , वहीं पर साथ ही घूटनों तक कीचड़ में फंसे हुए उसके पाँव , गर्मी में झुलसते हुए चेहरे , ठंड में ठिठुरते हुए उसके हाथ-पाँव अर्थात् सब प्रकार की ऋतुओं की ओर उनकी भीषणताओं को अपने कलेजे पर झेलता हुआ वह इंसान है, जो धरती को सोना बनाता है, पर उसका पेट नहीं भरता।2

भीली साहित्य

भीली साहित्य को प्रमुखतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है - प्रथम , प्रमुख साहित्य जिसमें लोकगीत एवं लोककथा, द्वितीय प्रकीर्ण साहित्य

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जिसमें लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे तथा तृतीय अन्य साहित्य जिसमें गद्य, पद्य, व्याकरण आदि आते हैं। लोककथा के संबंध में डॉ. विद्या चौहान का मत है कि -"लोक कथा के माध्यम से सामान्य लोक जीवन में प्रचलित विष्वास , आस्था और परम्परा पर आधारित कथाएँ लोक कथा के अन्तर्गत आती हैं। इससे मानव का पर्याप्त आमोद-प्रमोद होता है , आये दिन कथाएँ लोक कथा के अन्तर्गत आती हैं।"3 भीली साहित्य को लिखने का प्रयास अभी तक नहीं किया गया है यह वाचिक साहित्य में ही सम्पन्न है। भीली लोक भाषा में साहित्य का कोई लिखित इतिहास नहीं है। मौखिक परम्परा के रूप में ही साहित्य प्राप्त होता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। श्री वसन्त निरगुणे के अनुसार "वाचिक लोक साहित्य का हर अंचल में व्यापक विस्तार होता है। वाचिक लोक साहित्य का मुख्य आधार स्मृति और कंठ हैं , जिनमें लोकगीत, कथा-वार्ता, गाथा, कथागीत, भजन, मिथकथा, नाट्यपाठ, पहेली आदि होते हैं।"4

श्री रामनारायण उपाध्याय लिखते हैं कि "जिस तरह कठोर पर्वत अपने हृदय में सरिता के उद्गम को छिपाये रहते हैं, वैसे ही ऊपर से कठोर दिखने वाले ये जनपद जन अपने हृदय में लोक साहित्य की अक्षय परम्परा को जिन्दा रखे हुए हैं। इनके पास सभा के नहीं श्रम के गीत हैं , जिनकी अंगुली पकड़कर उसने शताब्दी की दूरियों को लांघा और अतीत से प्रेरणा ग्रहण कर भविष्य के लिए मार्गदर्शन पाया है।"5

मौखिक साहित्य की उज्जवल परम्परा ने अपने अर्जन और सृजन को कभी लुप्त नहीं होने दिया और न ही जड़ीभूत होने दिया , अपितु स्थापित रीति-रिवाजों के साथ सामंजस्य स्थापित कर लोकतत्वों की कसौटी पर स्वयं को सिद्ध करती रही।

निष्कर्ष

वर्तमान और प्राचीन समाज की तुलना करने पर आज समाज की स्थिति में काफी सीमा तक परिवर्तन दिखाई देते हैं। शिक्षा का प्रसार व अन्य जानकारियाँ ग्रामीणों के भविष्य के लिए उपयुक्त सिद्ध हुई है , किन्तु शिक्षा के साथ-साथ 'लोक साहित्य' को समझना तथा इसे बनाए रखना आवश्यक है।"6 वर्तमान में जनजातीय ग्रामीण जीवन पर आधुनिकता का प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा है। प्राचीन परम्परा और रीति-रिवाजों के निवर्हन में कमी आने लगी है। ऐसी स्थिति में लोक साहित्य को संकलित करने की समस्या भी होने लगी है। शहरी वातावरण से दूर बसे हुए ग्रामों में लोक साहित्य समृद्ध रूप से दिखाई देता है, किन्तु शहर के पास बसे हुए गाँवों में इसका अभाव मिलता है , साथ ही यहाँ इन क्षेत्रों में ग्रामीण एवं शहरी मिश्रित साहित्य देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गिलिन एवं गिलिन उद्धृत तिवारी एवं शर्मा, मध्यप्रदेश की जनजातियाँ, पृष्ठ. 3

2. डॉ.सी. पी. शुक्ल, लोक साहित्य की भूमिका , पृष्ठ 40

3. डॉ. .विद्या चौहान, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 51

4. डॉ. .एम.वाय.खान, बुलेटिन पत्रिका, पृष्ठ 63, जनवरी 2003

5. डॉ..शिवतोश दास, भारत की जनजातियाँ, पृष्ठ 64

6. डॉ..सरला चंडोला, फोकलोर हिन्दी, लोकवृत्त, पृष्ठ. 1-2